



विविध समाचार



सोनिया गांधी ने इंस्टाग्राम पर किया डेब्यू, अपनी किताब की पहली झलक की साझा

नयी दिल्ली २२/१० (संवाददाता): कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने बृहस्पतिवार को सोशल मीडिया में दस्तक देते हुए अपने ‘इंस्टाग्राम’ पेज की शुरुआत की और अपनी पुस्तक की पहली झलक साझा की। उन्होंने पहली बार किसी सोशल मीडिया मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। वह अब तक सोशल मीडिया से दूरी बनाए हुए थीं। उनके वीडियो संदेश या बयान पार्टी के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल से जारी किए जाते रहे हैं। इंस्टाग्राम पर आने के तुरंत बाद सोनिया गांधी ने अपने बेटे राहुल गांधी, बेटी प्रियंका गांधी वाद्रा और कांग्रेस के आधिकारिक अकाउंट को ‘फॉलो’ किया। उनके अकाउंट पर फॉलोअर की संख्या तेजी से बढ़ी और कुछ ही घंटों में यह एक लाख को पार कर गई। राहुल गांधी समेत इंस्टाग्राम पर मौजूद कांग्रेस के कई शीर्ष नेताओं ने भी पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष के अकाउंट की ‘फॉलो’ किया। कांग्रेस के कई नेताओं ने सोशल मीडिया पर सोनिया गांधी का स्वागत किया और उनकी आगामी पुस्तक को लेकर उत्सुकता जाहिर की। सोनिया गांधी ने इंस्टाग्राम पर अपनी

पहली पोस्ट में आगामी पुस्तक ‘बिलॉन्गिंग ए जर्नी ऑफ लव’ की प्रतियां प्राप्त करते हुए अपना एक वीडियो साझा किया। उन्होंने पोस्ट में कहा, “सभी को नमस्कार। इस पल को आप सभी के साथ साझा करते हुए मैं वास्तव में बहुत आभारी हूं। यह ‘बिलॉन्गिंग ए जर्नी ऑफ लव’ की पहली झलक है।” सोनिया गांधी ने कहा, “यह प्रेम, कर्तव्य, अपनों को खोने और अपनेपन की जगह तलाशने की कहानी है। मैं इसे आप सभी के साथ साझा करने को लेकर उत्सुक हूं।” वीडियो में सोनिया गांधी अपनी पुस्तक की पहली प्रति लेते हुए दिखाई देती हैं और इस अवसर पर अपनी बेटी प्रियंका गांधी वाद्रा के साथ मिठाई बांटती नजर आ रही हैं। वह यह भी बताती हैं कि पुस्तक में ‘बहुत सारी तस्वीरें’ हैं। इंस्टाग्राम पर उनके दस्तक देने के कुछ घंटे के भीतर ही उनके पहले वीडियो को 1.80 लाख लोगों ने लाइक किया। अपनी दूसरी इंस्टाग्राम पोस्ट में सोनिया गांधी ने पुस्तक के पन्ने पलटते हुए अपनी एक तस्वीर साझा की। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने उस वीडियो को पोस्ट करते हुए कहा, “कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया



गांधी का बहुप्रतीक्षित संस्मरण 10 नवंबर को प्रकाशित होगा।” ‘हार्पर कॉलिन्स इंडिया’ ने पिछले महीने घोषणा की थी कि वह सोनिया गांधी का संस्मरण ‘बिलॉन्गिंग ए जर्नी ऑफ लव’ भारत में 10 नवंबर को प्रकाशित करेगा। इस घोषणा के साथ पुस्तक के भारत में प्रकाशन को लेकर बनी अनिश्चितता समाप्त हो गई थी।

इससे पहले लेखिका के प्रतिनिधियों और ‘पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया’ के बीच “गतिरोध” की बात सामने आई थी। ‘हार्पर कॉलिन्स इंडिया’ ने एक बयान में कहा था, “हमारे समय के सबसे

प्रकाशक और लेखिका के प्रतिनिधियों के बीच मतभेद की खबरों के बाद विवाद शुरू हुआ था। कांग्रेस के कई नेताओं ने इस दौरान सरकारी दबाव और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से जुड़े सवाल उठाए थे। कुछ नेताओं ने आरोप लगाया था कि ‘पेंगुइन इंडिया’ पर पुस्तक से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) और मोदी सरकार के दौरान भारतीय क्षेत्र पर चीन के कब्जे से संबंधित अंश हटाने का दबाव था। हालांकि, पीआरएचआई ने ‘पीटीआई’ को दिए एक बयान में कहा था कि वह पुस्तक प्रकाशित करने को लेकर “वास्तव में उत्सुक” था और इसे हासिल करना काफी प्रयास से संभव हुआ था, लेकिन एक विशेष मुद्दे पर गतिरोध के कारण अंततः उसने इससे अलग होने का फैसला किया। पीआरएचआई ने इस बात पर जोर दिया था कि उस पर किसी तरह का बाहरी दबाव नहीं था। हालांकि, उसने गोपनीयता संबंधी प्रावधानों और लेखिका के साथ हुए समझौते का हवाला देते हुए गतिरोध की वास्तविक वजह बताते से इनकार कर दिया था। ‘बिलॉन्गिंग’ की शुरुआत इटली में सोनिया गांधी के

बचपन से होती है और फिर उनकी कैप्जिज तक की यात्रा का जिक्र करती है, जहां 1965 में उनकी मुलाकात राजीव गांधी से हुई थी। संस्मरण में राजीव गांधी से उनके विवाह, अपनी सास एवं पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से परिचय तथा भारत में जीवन के साथ तालमेल बैठाने के उनके प्रयासों का भी उल्लेख है। इनमें हिंदी सीखना, साड़ी पहनना और भारतीय खानपान एवं संस्कृति को अपनाना शामिल है। पुस्तक में गांधी परिवार को झकझोर देने वाली प्रमुख त्रासदियों का भी जिक्र है। इनमें विमान दुर्घटना में संजय गांधी की मृत्यु, 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या और 1991 में राजीव गांधी की हत्या शामिल हैं। संस्मरण में 2004 के लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन की जीत से जुड़ी राजनीतिक घटनाओं का भी उल्लेख किया गया है। उस समय सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और इसके बजाय कांग्रेस तथा उसके गठबंधन का नेतृत्व किया था। इस गठबंधन ने अगले एक दशक तक केंद्र में सरकार चलाई।

भाजपा विस्तार से अनुच्छेद ३७० हटाने तक, गृह मंत्री अमित शाह का ऐसा रहा राजनीतिक सफर

नयी दिल्ली २२/१० (संवाददाता): नौकरशाही और राजनीतिक हलकों में वचनबद्ध व्यक्ति के रूप में पहचाने जाने वाले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, जो 22 अक्टूबर को 62 वर्ष के हो जाएंगे, पिछले 12 वर्षों में भारतीय राजनीति की सबसे प्रभावशाली हस्तियों में से एक बनकर उभरे हैं। 2014 में भाजपा के अध्यक्ष के रूप में पार्टी की कमान संभालने के बाद से, उन्होंने पूरे भारत में भाजपा की राजनीतिक पहुंच का विस्तार किया है। 2019 में मोदी 2.0 सरकार के कार्यकाल के दौरान, देश का गृह मंत्री नियुक्त होने के तुरंत बाद, उन्होंने भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए कई ऐतिहासिक और निर्णायक फैसले लिए। 22 अक्टूबर 1964 को एक संपन्न गुजराती परिवार में कुसुब्बेन और अनिलचंद्र शाह के घर जन्मे अमित शाह ने पार्टी का आगे बढ़कर नेतृत्व किया है। उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के संगठनात्मक दायरे को बढ़ाने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में लगातार जीत दर्ज की है। बीजेपी अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, बीजेपी 10 करोड़ से अधिक पंजीकृत



सदस्यों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी बन गई। अपनी युवावस्था में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ने और बाद में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के सक्रिय सदस्य बनने वाले शाह, ज़मीनी स्तर से उत्कर भारत की सज़ाधारी पार्टी के प्रमुख बने हैं। उनके समर्पण, कार्यकुशलता और सबसे बढ़कर परिणाम देने की क्षमता के कारण, उन्हें कई राष्ट्रीय नेताओं के चुनाव अभियानों का प्रभारी बनाया गया। इनमें 1991 में लालकृष्ण आडवाणी और 1996 में दिवंगत अटल बिहारी वाजपेयी के चुनाव अभियान शामिल हैं, जो दोनों ही गुजरात के गांधीनगर संसदीय क्षेत्र से लड़े गए थे। 2013 में, शाह को बीजेपी का राष्ट्रीय महासचिव और उज्जर प्रदेश का प्रभारी नियुक्त किया गया। उनकी कड़ी मेहनत और प्रयासों की बदौलत बीजेपी को 2014 के संसदीय चुनावों में ऐतिहासिक सफलता मिली। जुलाई 2014 में उन्होंने बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद संभाला, और उसके बाद

उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। मई 2018 तक, शाह के नेतृत्व में बीजेपी और उसके सहयोगी दल 21 राज्यों में सज़ा में थे, जो पार्टी के चुनावी विस्तार के बड़े पैमाने को दर्शाता है। 1 जून 2019 को मोदी 2.0 सरकार में केंद्रीय गृह मंत्री का कार्यभार संभालने वाले शाह ने अपने कार्यकाल के दो महीनों के भीतर ही सबसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक फैसलों में से एक लिया। यह फैसला अनुच्छेद 370 को खत्म करने का था, जिसने तत्कालीन जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा दिया हुआ था। बाद में, अगस्त 2019 में, सरकार ने इस क्षेत्र के विशेष संवैधानिक दर्जे को समाप्त कर दिया और राज्य को पुनर्गठित करके जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के केंद्र शासित प्रदेशों में बांट दिया। यह कदम जम्मू-कश्मीर के प्रति केंद्र सरकार के दृष्टिकोण में एक बड़ा बदलाव था और शाह के कार्यकाल के सबसे अहम नीतिगत फैसलों में से एक बन गया। सरकार का तर्क था कि इन बदलावों से इस क्षेत्र में एकीकरण, विकास और बेहतर सुरक्षा को बढ़ावा मिलेगा। इस फैसले को लेकर काफी राजनीतिक और कानूनी बहस भी हुई।

नयी दिल्ली २२/१० (संवाददाता): कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा के बेटे और फोटोग्राफर रेहान वाद्रा की प्रदर्शनी से कई तस्वीरें हटाए जाने को लेकर बृहस्पतिवार को उस वक्त राजनीतिक विवाद खड़ा हो गया जब मुख्य विपक्षी दल ने आरोप लगाया कि अंग्रेजों की तरह भाजपा और आरएसएस के लोग भी सच से डरते हैं वहीं, ‘बीकानेर हाउस सोसाइटी’ ने कहा कि कुछ तस्वीरें उसकी नीति के अनुरूप नहीं पाए जाने के कारण उन्हें हटाने को कहा गया था और शेष तस्वीरें प्रदर्शनी में लगी हुई हैं। विवाद के बीच, रेहान ने कहा कि अधिकांश कला राजनीतिक होती है और किसी कला संस्थान को राजनीतिक विषयवस्तु की अनुमति नहीं देने का फैसला नहीं करना चाहिए। रेहान ने ‘पीटीआई वीडियो’ से कहा कि उनकी एक प्रदर्शनी ‘नो आइडिया इज फाइनल’ बुधवार शाम सात बजे शुरू होनी थी और इसके उद्घाटन से करीब 24 घंटे पहले बीकानेर हाउस प्रबंधन ने उन्हें बताया कि कुछ तस्वीरें आपज़िनक हो सकती हैं या संस्थान की नीति के खिलाफ हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि उन्होंने प्रबंधन से आपज़ियां लिखित रूप में देने



को कहा, लेकिन अगले दिन दोपहर करीब साढ़े 12 बजे उन्हें बताया गया कि प्रदर्शनी में शामिल 105 तस्वीरों में से करीब 70 को हटाना होगा। रेहान के अनुसार, उन्होंने पहले ही ऐसी कुछ तस्वीरें अलग कर दी थीं जिनमें स्पष्ट रूप से राजनीतिक नारे थे। कुछ अन्य तस्वीरों में झंडे और राजनीतिक नेता दिखाई दे रहे थे और वह उनके बारे में प्रबंधन से चर्चा करने के लिए तैयार थे। उन्होंने दावा किया कि अधिकारियों ने दिल्ली में हाल में हुए विरोध प्रदर्शनों के संदर्भ में कुछ तस्वीरों को ‘राजनीतिक’ बताते हुए उन्हें हटाने को कहा। रेहान ने कहा कि उनकी टीम ने कई

तस्वीरें हटा दीं, लेकिन राष्ट्रीय ध्वज वाली दो तस्वीरों को हटाने की मांग पर उन्होंने आपज़ि जताई। उनका दावा है कि जब वह प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिए तैयार होने घर गए थे, तब अधिकारियों ने भारतीय ध्वज वाली एक तस्वीर स्वयं हटा दी। उन्होंने कहा, “अधिकांश कला राजनीतिक होती है...आप एक कला संस्थान के रूप में काम करते हुए यह नहीं कह सकते कि राजनीतिक विषयवस्तु की अनुमति नहीं है।” रेहान ने यह भी कहा कि प्रदर्शनी का प्रारूप करीब एक सप्ताह पहले ही बीकानेर हाउस प्रबंधन के साथ

साझा किया गया था और यदि तस्वीरों को लेकर आपज़ि थी तो उस पर पहले ही चर्चा की जानी चाहिए थी। दूसरी ओर, बीकानेर हाउस सोसाइटी ने एक बयान में कहा कि वह कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए समर्पित सार्वजनिक सांस्कृतिक संस्थान है और वहां आयोजित प्रदर्शनों तथा उनसे जुड़ी गतिविधियों को बीकानेर हाउस प्रबंधन सोसाइटी की नीति के अनुरूप नहीं पाई गई।

इसलिए उन्हें हटाने का आग्रह किया गया।” उसने कहा कि नीति के अनुरूप पाई गई अन्य तस्वीरें प्रदर्शनी में लगी हुई हैं। इस बीच, रेहान के पिता रॉबर्ट वाद्रा ने कहा कि उन्हें अपने बेटे और उसकी मेहनत पर गर्व है। उन्होंने कहा कि रेहान ने दिल्ली में विरोध प्रदर्शनों के दौरान तस्वीरें ली थीं और प्रदर्शनी के लिए करीब एक सप्ताह पहले ही संबंधित अधिकारियों को विस्तृत सामग्री भेज दी थी। प्रियंका गांधी वाद्रा ने अपने बेटे की प्रदर्शनी से कई तस्वीरें हटाए जाने को

“हास्यास्पद” करार देते हुए आरोप लगाया कि देश के युवाओं की आवाज दबाई जा रही है। उन्होंने ‘एक्स’ पर अपने बेटे के नाम संदेश में कहा कि जब सज़ा में बैठा कोई व्यक्ति किसी अन्य की अभिव्यक्ति से डरने लगता है तो वह उस ताकत को पहले ही खो चुका होता है, जिसे वह बचाने की कोशिश कर रहा होता है। कांग्रेस के मीडिया विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने कहा, “युवाओं की अभिव्यक्ति के खिलाफ संघ की मानसिकता पूरी तरह सामने आ रही है।

जब युवा अपने मुद्दों को लेकर सड़कों पर उतरते हैं और अपनी बात रखते हैं, तो आपको परेशानी होती है। जब वे कला के माध्यम से अपनी बात कहते हैं, तब भी आपको परेशानी होती है। आखिर युवा अपनी बात कैसे रखें और उनकी अभिव्यक्ति से आपको ज़्या समस्या है?” उन्होंने कहा, “भारत के युवाओं की अभिव्यक्ति को लेकर अंग्रेजों को भी यही समस्या थी। युवा अपनी बात रखेंगे। उनकी बात सुनिए और देखिए। यह कला है, आखिर इससे भी आपको ज़्या समस्या है?” खेड़ा ने कहा कि असल बात है कि ये लोग सच से डरते हैं।

भाजपा के सांसद निशिकांत दुबे का आरोप, विदेशी ताकतों संग मिलकर देश को अस्थिर कर रहे हैं राहुल गांधी

नयी दिल्ली २२/१० (संवाददाता): भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सांसद निशिकांत दुबे ने गुरुवार को आरोप लगाया कि भारत में विपक्ष के नेतृत्व में हो रहे विरोध-प्रदर्शन देश को अस्थिर करने की एक साजिश का हिस्सा हैं। यहाँ एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए, दुबे ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के अमेरिकी सांसदों इल्हान उमर और रो खन्ना के

साथ कथित संबंधों पर सवाल उठाए। साथ ही, उन्होंने विदेशी फंडिंग, क्रिप्टोकरेंसी और ऑनलाइन जुए को लेकर भी चिंता जताई। दुबे ने दावा किया कि विदेशी संगठन और कुछ लोग भारत में सरकार बदलने के लिए विरोध प्रदर्शनों को बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेतृत्व विदेशी ताकतों के साथ मिलकर काम कर रहा है, हालाँकि उन्होंने अपने इन

दावों को साबित करने के लिए कोई स्वतंत्र रूप से सत्यापित सबूत पेश नहीं किए। दुबे ने कहा कि ये सभी लोग – कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में जो भी हैं, विपक्ष में जो भी हैं – वे सब विदेशी ताकतों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। इनका मकसद सिर्फ सरकार बदलना नहीं, बल्कि देश को तोड़ना है। राहुल गांधी की विदेश यात्राओं और मुलाकातों पर सवाल उठाते हुए, भाजपा



सांसद ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता ऐसे लोगों से मिले हैं, जो उनके अनुसार भारत के

हितों के खिलाफ काम कर रहे हैं। अमेरिकी सांसदों का जिक्र करते हुए दुबे ने कहा कि मैंने

संसद में कहा था कि सोरोस फाउंडेशन की आड़ में वे इल्हान उमर और रो खन्ना से मुलाकात करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि कांग्रेस से मेरा सवाल है – नेविल रॉय सिंघम, ऑनलाइन जुए, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्रिप्टोकरेंसी से जुड़े समूहों के किन लोगों से राहुल गांधी पिछले पांच वर्षों में मिले हैं? इनमें से कौन से लोग उनकी %भारत जोड़ो यात्रा% या ऐसी ही अन्य यात्राओं में शामिल

हुए हैं? इसके अलावा, जब भी वे विदेश जाते हैं, तो वे इनमें से किन लोगों से मिलते हैं, और देश को अस्थिर करने के लिए वे किस तरह की योजनाएं बनाते हैं? उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि ज़्या भारत को अस्थिर करने की कथित साजिशों में सैम पित्रोदा की कोई भूमिका थी। उन्होंने यह भी पूछा कि विदेशी दलों के दौरान गांधी किन लोगों से मिले थे और उनकी %भारत जोड़ो

यात्रा% से कौन-कौन लोग जुड़े थे। दुबे ने अमेरिकी कांग्रेस के कुछ दस्तावेजों का भी जिक्र किया, जिनमें विदेशी प्रभाव, विरोध प्रदर्शनों और तकनीक से जुड़ी चिंताओं पर चर्चा की गई थी। उन्होंने इस मुद्दे को क्रिप्टोकॉरेंसी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और ऑनलाइन जुए से जोड़ते हुए आरोप लगाया कि विदेशी ताकतें राजनीतिक आंदोलनों को प्रभावित करने के लिए इन क्षेत्रों का इस्तेमाल कर सकती हैं।



विविध समाचार



सूरजमुखी की चमक

130 से 160 किग्रा, एसएसपी 375 किग्रा व पोटाश 66 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की 2/3 मात्रा व स्फुर एवं पोटाश की समस्त मात्रा थोते समय प्रयोग करें एवं नाइट्रोजन की 1/3 मात्रा को बुवाई के 30-35 दिन बाद पहली सिंचाई के समय खड़ी फसल में देना लाभप्रद पाया गया है।



सिंचाई

जायद में बोयी गई (फरवरी माह में) सूरजमुखी की फसल में 3 सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है। पहली सिंचाई बुवाई के 30-35 दिन बाद करें व इसी अवस्था में नाइट्रोजन की 1/3 मात्रा का उपयोग करें। द्वितीय सिंचाई 20-25 दिन बाद फूल आने की अवस्था में करें एवं अंतिम सिंचाई बीज बनने की अवस्था में करें।

कीट नियंत्रण

प्रायः सूरजमुखी की फसल पर एफिड्स, जैसिड्स, हरे रंग की सुंड़ी व हेड बोरर का प्रकोप अधिक होता है। रस चूसक कीट, एफिड्स, जैसिड की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 125 ग्राम प्रति हेक्टेयर या एसिटामिप्रिड 125 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें व सुंड़ी व हेड बोरर के नियंत्रण के लिए किंगनालाफॉस 20 प्रतिशत 1 लीटर दवा को या प्रोफेनोफॉस 50 ईसी 1.5 लीटर दवा को 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कें।



फसल सुरक्षा

सूरजमुखी में बहुधा तोते सर्वाधिक नुकसान पहुंचाते हैं। तोते प्रायः दाने पड़ने की अवस्था से लेकर दाने पकने की अवस्था तक (एक माह) अधिक नुकसान पहुंचाते हैं।

कटाई एवं गहाई

फसल की कटाई उस समय करें जब कि फूल का पिछला हिस्सा नींबू जैसा पीला रंग का हो जाये और फूल झड़ जाये तो फसल तैयार समझना चाहिए। इस स्थिति में फूल को काटकर खलिहान में लायें व 3-4 दिन खलिहान में सूखने के बाद उड़ों से पीटकर बीज निकालें।

उपज

सूरजमुखी की फसल 90-105 दिन में पककर तैयार हो जाती है व उन्नत विधि से उत्पादन करने पर 18-20 क्विंटल/हेक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है।



भूमि का चुनाव

सूरजमुखी की फसल हर प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है, जहां पर पानी निकास का अच्छा प्रबंध हो।

प्रमुख किस्में

सूरजमुखी की एक मात्र किस्म मार्डन बहुत लोकप्रिय है परंतु अब कई संकर किस्में भी उपलब्ध हैं जैसे डीएचएस-1, केबीएसएस-1, ज्वालामुखी, एमएसएफएच-17, सूर्या आदि।

बुवाई का समय एवं विधि

सूरजमुखी की फसल प्रकाश संवेदी है अतः इसे वर्ष में तीन बार (रबी, खरीफ एवं जायद ऋतु) में बोया जा सकता है। जायद मौसम में सूरजमुखी को फरवरी के प्रथम सप्ताह से फरवरी के मध्य तक बोना सबसे उपयुक्त होता है, जायद मौसम में कतार से कतार दूरी 45 सेमी व पौध से पौध दूरी 25-30 सेमी की दूरी पर बुवाई करें।

खाद एवं उर्वरक

बुवाई से पूर्व 7-8 टन प्रति हेक्टेयर की दर से सड़ी हुई गोबर खाद भूमि में खेत की तैयारी के समय खेत में मिलायें व अच्छी उपज के लिए सिंचित अवस्था में यूरिया

रोग नियंत्रण

सूरजमुखी की फसल में मुख्यतः रतुआ, डाकनी मिल्द्यू, हेड राट, राइजोपस हेड राट जैसी समस्याएं आती हैं। पत्ती झूलसा रोग के नियंत्रण हेतु मेन्कोजेब 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

कम लागत में मूंग



उपचरित बीज को राइजोभियम व पीएसबी कल्चर से निवेशित करें चाहिए। इस हेतु 5 ग्राम कल्चर प्रति किग्रा बीज के मान से उपयोग किया जा सकता है।

सिंचाई

वर्षियों में फसल होने के कारण फसल को 5-6 सिंचाईयों की आवश्यकता पड़ती है। क्रांतिक अवस्था जैसे शाखा बनते समय, फलियां बनते समय तथा दाना भरते समय सिंचाई करना आवश्यक होगा।

पौध संरक्षण

मूंग की फसल में कई बार पतियों पर भूरे रंग के धब्बे बनते हैं जो फैलकर पूरे पौधे को झूलसा देती है। साथ ही भूभूतिया रोग का प्रकोप होता है। इस रोग में पतियों पर सफेद चूर्ण जमा हुआ दिखता है। दोनों ही रोगों के नियंत्रण के लिए कार्बेन्डाजिम की एक ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मूंग की फसल पर फली शीटल, सफेद मक्खी, थ्रिप्स, फली छेदक कीटों का प्रकोप होता है। इनके नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 400 मिली 200 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

खेत की तैयारी

रबी की कटाई के बाद दो-तीन बार हल चलाकर मिट्टी को भुरभुरा व नीड रहित करें। पाटा लगाकर खेत को समतल करें।

उन्नत बीज का चुनाव, मात्रा व उपचार

शुद्ध, प्रमाणित, रोग मुक्त बीज का चयन करें। भंडारित बीज को साफ करके, अंकुरण परीक्षण करने के बाद बोने हेतु उपयोग में लायें। बोनी हेतु के. 851, पीडीएस 139, पूसा बैसाखी, पूसा किसान, जवाहर मूंग 131 में से किसी भी एक किस्म का 12-15 किग्रा, बीज प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। ग्रीष्मकालीन मूंग की बोनी का उपयुक्त समय मार्च से अप्रैल का प्रथम सप्ताह है। कतार से कतार से बीज की दूरी 10 सेमी रखें साथ ही बीज को 3-4 सेमी की गहराई पर लगाएं। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति किग्रा बीज दर से उपचार करें ताकि बीज जनित रोगों से छुटकारा मिल सके।

खाद व उर्वरक

मिट्टी परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का उपयोग करें। यूरिया, सिंगल सुपर फॉस्फेट व म्यूरेट ऑफ पोटाश की 43:375:33 किग्रा प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करें। 40 किग्रा डीएपी के साथ 10 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ का उपयोग भी किया जा सकता है। जलवायु से संबंधित कार्वेन्डाजिम को



गर्मियों की तिल

भूमि

दो

मट, हल्की चिकनी एवं कछारी भूमि तिल की खेती हेतु उपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी

अच्छी जुताई कर भुरभुरी मिट्टी वाला समतल खरपतवार रहित खेत तैयार करें। सिंचाई हेतु नालियों एवं कचारियों की व्यवस्था करना चाहिए।

बीज की मात्रा एवं बीजोपचार

5-6 किग्रा/ हे. की दर से उन्नत किस्म के प्रमाणित कार्वेन्डाजिम (2 ग्राम/किग्रा) फफूंदनाशी से बीजोपचार कर बोयें। बीजों के समान वितरण हेतु बीज : गोबर की खाद (2:20) मिलाकर बोनी करें।

उन्नत किस्में

गोष्प ऋतु हेतु तिल की अनुशंसित किस्में टीकेजी-22, टीकेजी-55, जेटीएस-8, टीकेजी-306 फरवरी के तृतीय से चतुर्थ सप्ताह में बोयें। बोने में कतारों से कतारों की दूरी 12 इंच तथा पौधों से पौधों की दूरी 4 इंच रखने से उपयुक्त पौध संख्या 3 लाख / हे. प्राप्त होती है।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की 10 टन खाद/ हेक्टेयर तथा रसायनिक उर्वरक 60:40:20 किग्रा नत्रजन:फास्फोरस:पोटाश/ हेक्टेयर की दर से डालें। स्फुर एवं पोटाश की पूरी मात्रा और नत्रजन

की आधी मात्रा बोनी के समय तथा शेष आधी नत्रजन की मात्रा बोने के 3-4

निराई-गुड़ाई

बोने के 15-20 दिन बाद निराई-गुड़ाई करें और उसी समय अनावश्यक घने पौधे को निकाल दें।

सिंचाई

जायद मौसम हेतु ऐसी किस्मों का चयन करें। जो कम पानी व कम समय में अधिक उत्पादन दे। सामान्य तौर पर मई-जून में 7 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए तथा



सिंचाई सुबह-शाम करें। फूल आने तथा फलियां बनते समय तिल की फसल में सिंचाई अत्यंत आवश्यक है।

कीट नियंत्रण

तिल को पत्ती मोड़क एवं फली बेघक कीट पौधों की पत्ती अवस्था में एवं फूलों के अंदर घुसकर भीतरी भाग खाकर एवं फलियों में छेदकर फसल को नुकसान पहुंचाती है। किनालफॉस 25 ईसी (2 मिली/ली.) या डाइमेथियेट (1 मिली/लीटर) का आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

रोग नियंत्रण

तिल की फसल में तना एवं जड़ सड़न रोग, आल्टरनेरिया पत्ती धब्बा रोग का प्रकोप होता है साथ ही पर्णभाग रोग का प्रकोप होता है जिसमें फूल हरे पतियों में बदल जाते हैं। अधिक शाखायें और छोटी पतियां गुच्छों में होती हैं। रोग नियंत्रण हेतु उपयुक्त फसल चक्र अपनारें। कीट/ रोग से ग्रसित पौधों के भाग को तोड़कर/उखाड़कर तथा इमियों को इकट्ठा कर नष्ट करें। डायथेन एम-45 (2.5 ग्राम/ली.) मिलाकर बोने के 30 और 60 दिन पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।

कटाई और गहाई

पतियां पीली होकर झड़ने लगे तथा फलियां हरी हो तभी तिल की कटाई करें। कटी फसल को लकड़ी के सहारे रखकर अच्छी तरह सुखायें। सूखे पौधों को छड़ियों से पीटकर गहाई करें।

उपज

700-800 किग्रा/ हेक्टेयर होती है।



कलिंग समाचार



संपादकीय

स्कूली शिक्षा-चिंताजनक तस्वीर

एक ओर तो भारत विश्वगुरु होने का दावा कर रहा हैए तो वहीं दूसरी तरह स्कूली शिक्षा में बड़ी गिरावट की रिपोर्ट सामने आ रही है जो बेहद चिंताजनक है। स्वयं केन्द्र सरकार द्वारा जो आंकड़े जारी किये गये हैं वे भारत की भयावह तस्वीर पेश कर रहे हैं. वर्तमान व भावी दोनों ही। कोई भी अंदाजा लगा सकता है कि ज्ञान के बिना कैसा भारत बनेगा। वैसे तो स बन्धित विभाग द्वारा इन आंकड़ों को अब न्यायसंगत बतलाने की कवायद भी जारी हैए लेकिन यथार्थ यही है कि शिक्षा के मामले में भारत में बड़ी गिरावट दर्ज हुई है। स्कूली शिक्षा ही उच्चतर शिक्षाए शोध और यहां तक कि अध्ययन के पश्चात देश को चलाने वाली पीढ़ी के स्तर को भी तय करती है। अगर नयी पीढ़ी का शैक्षणिक स्तर खराब रहा तोए जैसा कि आंकड़े बतला रहे हैंए देश का एक स्याह व निराशाजनक भविष्य ही दिखता है। सरकार को चाहिये कि तमाम मतांतर्ों को एक तरफरखकर शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने में जुट जाये। सभी तरह के पूर्वाग्रहों को छोड़कर हर बच्चे को स्कूली शिक्षाए वह भी गुणवत्तायुक्त दिलाना सरकार का पहला कर्तव्य होना चाहिये। शिक्षा मंत्रालय की एकीकृत जिला सूचना प्रणाली यूडीआईएसई द्वारा साल 2023-24 की जो रिपोर्ट जारी की गयी हैए उसके अनुसार इस वर्ष के दौरान देश भर के स्कूलों में 37 लाख नामांकनों की कमी आई है। यूडीआईएसई नामक यह प्लेटफ़ॉर्म राष्ट्रीय स्तर पर स्कूलों के आंकड़े एकत्र करता है। उसके अनुसार 2022–23 में 25.17 करोड़ नामाकित विद्यार्थी थे जो 2023.24 में घटकर 24.80 करोड़ हो गये। छत्र 21 लाख और छात्राएं 17 लाख घट गयीं। अल्पसं यकों की सं या 20 फ़ीसदी कम हुई। हालांकि इस विभाग के अधिकारी इन आंकड़ों को तर्कसंगत बताने की कोशिश करते हुए कह रहे हैं कि डेटा संग्रहण प्रणाली में परिवर्तन हुआ है। 2021-22 के पहले तथा अब के आंकड़ों में तुलना नहीं हो सकती और वास्तविक स्थिति अलग है। वे यह भी बतला रहे हैं कि 2030 तक सभी स्तरों तक स्कूली शिक्षा उपलब्ध कराई जायेगी। अन्य तथ्यों तथा विभागीय अधिकारियों द्वारा 2030 से स बन्धित तमाम दावों को एक ओर रख दिया जायेए तो भी इन आंकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह स्थिति कोई उ मीद लेकर नहीं आती। आधुनिक विश्व में शिक्षा का महत्व सभी जानते हैं। बगैर अथवा गुणवत्ताहीन शिक्षा के आधार पर कोई भी व्यक्तिए समाज या देश विकास की कल्पना भी नहीं कर सकता। जो भी देश आज अग्रणीए विकसित और सही मायनों में आधुनिक हैंए वे दरअसल अनिवार्यए सभी की सहज पहुंच वाली तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा व्यवस्था के कारण ही हैं। इसलिये आधुनिक भारत के निर्माताओं ने इस पर बहुत जोर दिया था। वर्षों की गुलामी से बाहर निकले भारत को सीमित संसाधनों व अनेक दुश्चारियों के बावजूद तेजी से विकास की राह पर अग्रसर करने के लिये आधुनिक शिक्षा प्रणाली की बुनियाद रखी गयी थी। देश भर में शासकीय स्कूलों एवं कॉलेजों का जाल बनाया गया। राष्ट्र निर्माताओं की वह ऐसी पीढ़ी.लिखी जमात थी जो उच्च शिक्षित तथा विद्वान थी। इसलिये उसे शिक्षा का महत्व मालूम था। इसी शिक्षा व्यवस्था ने देश को जल्दी ही आधुनिक देशों की पंक्तियों में ला खड़ा किया था। न सिर्फ़शालेय शिक्षा बल्कि उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिये भी अल्प समय में कई विश्वविद्यालय, आईआईएम, इंजीनियरिंग,आईआईटी जैसे संस्थान खोले गये थे। इनसे निकले युवाओं ने देश के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ज्यादातर सरकारों ने इसकी महत्ता को जान.समझकर देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर करने की उत्तरोत्तर कोशिशें कीं लेकिन 2014 में आई भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने इसकी जैसी उपेक्षा कीए वैसी आजाद मुल्क ही नहीं वरन अंग्रेजी शासनकाल में भी नहीं हुई थी। यह उपेक्षा अनायास नहीं वरन सायास है और हीनभावना से ग्रस्त शासकों द्वारा की गयी है जो पढ़ने.लिखने से दूर तक नाता न रखने वाले हैं। प्रबुद्ध समाज को यह सरकार मानो अपना दुश्मन मानती है। इस मद में सरकार का बजट घटता चला गया है या उसका बड़ा हिस्सा उपयोग में नहीं लाया जाता।

नये राज्यपाल के आने के बाद बिहार में राजनीतिक बदलाव की संभावना

अरुण श्रीवास्तव
नीतीश कुमार के बिना भाजपा चुनावी जंग जीतने की कल्पना भी नहीं कर सकती। 22 दिसंबर को नुकसान की भरपाई के उपाय के तौर पर राज्य भाजपा नेता और उपमु यमंत्री सम्राट चौधरी ने स्पष्ट रूप से कहा कि आगामी बिहार चुनाव एनडीए और मु यमंत्री के चेहरे के रूप में जेडी;यूद्ध प्रमुख नीतीश कुमार के साथ चुनाव लड़ा जायेगा।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन ;राजगद्ध की 25 दिस बर को हुई बैठक के कई जटिल निहितार्थ थे। इसका उद्देश्य विपक्ष के आ यानों का मुकाबला करने के लिए एक तंत्र विकसित करना थाए मु य रूप से भाजपा के दिग्गज नेता अमित शाह को कांग्रेस के आक्रामक रूख से बचाने के लिएए कथोंकि कांग्रेस नेता भारत के संविधान निर्माता डॉण् बीण्आरण् अंबेडकर संबंधी शाह के बयान पर उनपर निशाना साध रहे हैं। दूसरा महत्वपूर्ण एजंडा नीतीश कुमार जैसे नेताओं को उनकी जगह दिखाना था। इसी के मद्देनजरए भाजपा की तर्ज पर एनडीए के लिए मार्गदर्शक मंडल बनाने का मुद्दा भी सामने आया।

एनडीए के अधिकांश नेताओं के लिए बैठक बुलाना अनिवार्य हो गया था। भाजपा नेताओं के उस वर्ग के लिए भीए जो भाजपा आईटी सेल और अमित शाह के करीबी लोगों द्वारा फैलाये जा रहे झूठ को मानने के लिए तैयार नहीं थे। राज्यसभा में अंबेडकर के खिलाफउनकी टिप्पणी के बाद एनडीए के कुछ सहयोगी दलों ने अपना गुस्सा और खीझ जाहिर की थी। आरएसएस के शीर्ष नेताओं ने भी शाह की गैरजि मेदाराना बयानबाजी की आलोचना की थी। स्थिति को संभालने के लिए पहले कदम के तौर पर भाजपा नेतृत्व ने एनडीए की बैठक बुलाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहले

ही अमित शाह को आंध्र प्रदेश के मु यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और बिहार के मु यमंत्री नीतीश कुमार को अपने पक्ष में करने की सलाह दी थी।

एनडीए के सभी नेताओं में नीतीश कुमार सबसे आक्रामक थेए हालांकि शुरुआत में चिराग पासवान और जीवन राम मांझी भी काफी नाराज थे। पशुपति पारस के जाने के बाद एनडीए ने उन्हें पहले ही परेशान कर दिया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अन्य नेताओं ने कांग्रेस पर निशाना साधा और कथित संवैधानिक उल्लंघन के लिए उसकी कड़ी आलोचना की। मोदी ने इंडिया ब्लॉक पार्टियों पर हमला करने से परहेज किया। उनका पूरा प्रयास संकट से बाहर निकलने का था। अमित शाह को कांग्रेस के हमले में गहरी साजिश नजर आयी। शाह ने कहा कि कांग्रेस शुरू में चुप रहीए लेकिन फिर राजनीतिक बयानबाजी के लिए उनके बयानों को संपादित और गलत तरीके से पेश किया।

शाह ने आगे आरोप लगाया कि इन दावों को दुर्भावनापूर्ण तरीके से बढ़ाने के लिए एक टूलकिट का इस्तेमाल किया गया था। शाह को सफेद झूठ बोलते देखना चौंकाने वाला था। फिर भीए शाहए जो कुछ समय से नीतीश के साथ सहज हैंए ने उन्हें हटाने के लिए मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य का उपयोग करने का फैसला किया। जिस दिन एनडीए कांग्रेस का मुकाबला करने के लिए अपनी रणनीति बनाने के लिए बैठक कर रहा थाए उसी दिन मोदी.शाह की जोड़ी ने केरल के राज्यपाल आरिफ मोह मद खान को बिहार भेज दिया। संयोग सेए आरिफ के तबादले पर नीतीश से चर्चा नहीं की गयी थी। यह रात ग्यारह बजे के बाद हुआ।

स्थानांतरण का अपना महत्व है। नीतीश और आरिफ दोनों ही वीपी सिंह कैबिनेट के सदस्य थे। वे अच्छे दोस्त

हैं। अमित शाह को यकीन था कि नीतीश उनके कार्यभार संभालने पर आपत्ति नहीं करेंगे। इसका मु य कारण नीतीश को मुसलमानों का अपमान करने का कोई मौका नहीं देना था। अंबेडकर प्रकरण के बाद नीतीश कुमार ने अपनी भावनाओं से अवगत कराया था कि उन्हें अमित शाह द्वारा दलितों की भावनाओं का अपमान करना पसंद नहीं है।

वे पहले से ही मुसलमानों का अपमान करने और उन पर आरोप लगाने के लिए मोदी और शाह से नाराज थे। नीतीश कुमार ने 23 दिसंबर को मोतिहारी से शुरू की गयी अपनी प्रगति यात्रा के दौरान बाबा साहेब अंबेडकर की तस्वीर के सामने सिर झुकाया और उनके विचारों और आदर्शों की सफलता के लिए काम करने की कसम खाई। जेडी;यूद्ध के कुछ वरिष्ठ नेताओं के अनुसारए यह मोदी.शाह को यह संदेश देने की कोशिश थी कि वह अंबेडकर पर उनकी राजनीतिक लाइन का समर्थन नहीं करते।

हालांकि अमित शाह उनके रवैये से चिढ़ते हैंए लेकिन मौजूदा राजनीतिक हालात में उनके पास नीतीश के रुख का सार्वजनिक रूप से समर्थन करने के अलावा कोई विकल्प नहीं हैए लेकिन अंदरूनी सूत्रों का कहना है कि उन्हें बाहर करने के लिए एक सुनियोजित योजना पर काम किया जा रहा है। बिहार में अमित शाह अपने महाराष्ट्र या मध्य प्रदेश के फ़ैमूले को नहीं दोहरायेंगे। इसके बजाय वह दलदल वाली रणनीति अपनायेंगे। जै से जेडी;यूद्ध नेताओं का एक समूह उन्हें बताये बिना अपना नेता चुने और फिर उनके बाहर होने की घोषणा करे।

भाजपा के कुछ नेताओं के सार्वजनिक दावे के बावजूद कि बिहार एनडीए 2025 के विधानसभा चुनाव नीतीश के नेतृत्व में लड़ेगाए राष्ट्रीय नेताओंए खासकर अमित शाह ने संकेत

दिया है कि उनकी पार्टी उचित समय पर फैसला करेगी। केंद्रीय मंत्री ललन सिंहए जिन्हें अमित शाह का करीबी माना जाता है और कार्यकारी अध्यक्ष संजय झाए जो शाह के मित्र हैंए को छोड़कर जेडी;यूद्ध के अधिकांश वरिष्ठ नेताओं को यह अच्छा नहीं लगा।

नीतीश कुमार द्वारा कुछ दिन पहले राज्य स्तरीय श्रैश्विक निवेश स मेलनश् का बहिष्कार करने से यह आशंका और बढ़ गयी है कि वे कोई अतिवादी कदम उठा सकते हैं। नाराज नीतीश कुमार ने 20 दिसंबर को राजगीर में मगध सम्राट जरासंध की एक प्रतिमा का अनावरण करने के लिए नालंदा जिले का अपना दौरा भी रद्द कर दिया। मौजूदा राजनीतिक परिदृश्य में भाजपा नीतीश कुमार से दुश्मनी मोल लेने की हि मत नहीं कर सकती। हालांकि अमित शाह की टिप्पणियों के बाद जेडी;यूद्ध और नीतीश दोनों ही घबरा गये हैं। नीतीश कुमार के बिना भाजपा चुनावी जंग जीतने की कल्पना भी नहीं कर सकती। 22 दिसंबर को नुकसान की भरपाई के उपाय के तौर पर राज्य भाजपा नेता और उपमु यमंत्री सम्राट चौधरी ने स्पष्ट रूप से कहा कि आगामी बिहार चुनाव एनडीए और मु यमंत्री के चेहरे के रूप में जेडी;यूद्ध प्रमुख नीतीश कुमार के साथ चुनाव लड़ा जायेगा। राष्ट्रीय भाजपा नेताओं को डर है कि उनकी योजना लागू होने से पहले ही विफल हो जायेगी। नीतीश कुमार जहां 2025 के मध्य में चुनाव कराने पर विचार कर रहे हैंए वहीं भाजपा नेता अक्टूबर.नवंबर में होने वाली नियत तिथि पर अड़े हुए हैं। दरअसल नीतीश कुमार को भाजपा की योजना के बारे में पता चल गया है और वह निश्चित रूप से उन्हें माफ नहीं करना चाहेंगे। सूत्रों का कहना है कि वह भाजपा नेताओं की विश्वासघाती योजनाओं से पहले

से ही वाकिफहैंए यही वजह है कि वह चुनाव समय से पहले कराना पसंद करेंगे। लेकिन उन्हें नये राज्यपाल आरिफ मोह मद खान की भूमिका पर भी संदेह है।

इस बीचए सूत्रों का कहना है कि उन्होंने चुनौतियों से पार पाने के लिए बैंक चैनल खोल दिये हैं। राजद के कुछ नेताओं का मानना है कि लालू यादव नीतीश कुमार को समर्थन देने को तैयार हैंए लेकिन एक शर्त के साथरू उनके बेटे और पूर्व उपमु यमंत्री तेजस्वी यादव को मु यमंत्री बनाया जायेगा। हालांकिए कुछ विपक्षी नेता इसे बेतुका मानते हैं और वे पहले स्थिति को संभालने और भाजपा की योजना को विफल करने के पक्ष में हैं। विवाद की शुरुआत जेडी;यूद्ध में दूसरे नंबर के नेता माने जाने वाले संजय झा द्वारा आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल को लिखे गये पत्र से हुई। एक सांसद के तौर पर झा किसी भी राजनीतिक दल के अध्यक्ष को पत्र लिख सकते हैंए लेकिन उन्हें यह समझना चाहिए था कि वे केजरीवाल द्वारा नीतीश कुमार को लिखे गये पत्र का जवाब दे रहे हैं। अपने जवाब में वे केजरीवाल के प्रति काफी कठोर थे। सवाल उठता है कि क्या वे व्यंग्यात्मक और तिरस्कारपूर्ण हो सकते हैं्च क्या पत्र की विषय.वस्तु पर नीतीश कुमार की सहमति थी्च बेशक झा की नीतीश के प्रति निष्ठा और समर्पण उन्हें दूसरों से अलग करता है।

उल्लेखनीय है कि 19 दिसंबर को आप संयोजक अरविंद केजरीवाल ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के सीएम चंद्रबाबू नायडू को पत्र लिखकर उनसे पूर्व कानून और न्याय मंत्री बीआर अंबेडकर के बारे में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के कथित विवादास्पद बयान के प्रभाव पर विचार करने का आग्रह किया। 20 दिसंबर को झा ने उन पर हमला कियारू

अंधभक्त होने की शर्त पूरा करते लोग

कि संघ प्रमुख इशारों में फिर से नरेन्द्र मोदी को नसीहत दे रहे हैं कि उनके शासन में सांप्रदायिक तनाव बढ़ाने वाले ये प्रकरण संघ को ठीक नहीं लग रहे हैं। हालांकि अब संघ के मुखपत्र आर्गनाइजर का जो संपादकीय आया हैए उसमें फिर यह बात स्थापित हो गई कि संघ जिन उद्देश्यों के साथ सौ साल पहले अस्तित्व में आया थाए वह अब भी उन्हीं पर कायम है। इस संपादकीय में लिखा है कि इस यतागत न्याय की खोज के बारे में बात करने का वक्त आ गया है। बाबा साहेब अंबेडकर ने जाति आधारित भेदभाव की असली वजह को समझा और इसे खत्म करने के लिए कुछ संवैधानिक उपाय हमारे सामने रखे। हमें धार्मिक झगड़ों को समाप्त करने के लिए इसी तरह के दृष्टिकोण की जरूरत है।ए संपादकीय में तर्क दिया गया है कि यह तभी संभव है जब मुस्लिम समुदाय सत्य को स्वीकार करे और अगर यह समुदाय इससे इनकार करता है तो इससे अलगाववाद को बढ़ावा मिलेगा। आर्गनाइजर लिखता है .भारत के मुस्लिम समुदाय के लिए यह जरूरी है कि वह आक्रांताओं द्वारा हिंदुओं के साथ किए गए श्रेतिहासिक अन्यायश् को स्वीकार करे। सोमनाथ से लेकर संभल और इसके आगे

तक सच को जानने की यह लड़ाई धार्मिक श्रेष्ठता के बारे में नहीं है। यह हमारी राष्ट्रीय पहचान को साबित करने और र्सस यतागत न्यायश् के बारे में है। इधर विश्व हिंदू परिषद के एक नेता सुरेंद्र जैन ने एक टीवी चैनल से चर्चा में कहा कि १984 में भारत के संतों ने मुस्लिम समाज को बहुत अच्छा ऑफर दिया था कि आप हमें केवल तीन दे दीजिएए अयोध्याए मथुरा और काशीण् हम लाखों को भूल जाएंगे। आज की परिस्थिति जो बनी है उसके लिए मुस्लिम नेतृत्व जि मेदार है। अयोध्या हमने लिया है वो लड़कर लिया है। यदि मुस्लिम उस समय आगे आए होते तो ये तीनों स्थान हमारे होतेये ये विषय ही नहीं आता है। नरेन्द्र मोदी और मोहन भागवत ने जो बयान दिए हैंए उनमें और उपरोक्त बातों में कोई तालमेल नजर नहीं आता। लेकिन फ़िल्तहाल यही देश की हकीकत है कि शीर्ष पर बैठे लोग प्रेम और सद्भाव का ज्ञान दे रहे हैं और उनके अधीनस्थ या निर्देशन में काम कर रहे लोग नफ़्त को बढ़ाने में लगे हैं। मुसलमानों को मीठी जुबान में धमकी दी जा रही है कि हमें मस्जिदों को तोड़कर मंदिरों की तलाश करने दो। हालांकि वास्तव में यह धमकी देश के संविधान और न्याय

व्यवस्था को दी जा रही है कि बाबरी मस्जिद जैसी घटनाएं देश में बार.बार होंगी और हिंदुत्व के ठेकेदारों को तब तक कोई रोक नहीं पाएगाए जब तक संघ और चलेगा। जब इंडिया गठबंधन सामाजिक न्याय के मुद्दे को राजनीति की मु यधारा में लाने की कोशिश में हैए तब संघ स यतागत न्याय का नया शिगूफ़ छोड़ चुका है।

क्रिसमस के मौके पर देश में कई स्थानों पर ऐसी घटनाएं हुईए जो मोदी और भागवत के बयानों के ठीक विपरीत हैं। ईंदौर में जौमैटो कंपनी के एक कर्मचारी को हिंदू संगठन के लोगों ने बीच सड़क पर रोककर उसकी सांता क्लॉज की पोशाक उतरवाई और बाकायदा इसका वीडियो भी बनाया। उस कर्मचारी को ये गुंडा तत्व कह रहे हैं कि हिंदू त्योहारों तुम इसी तरह तैयार होकर क्यों नहीं जाते। राजस्थान में एक स्कूल में क्रिसमस कार्निवाल को लोगों ने बीच में रुकवा दियाए उन्हें आपत्ति थी कि ईसाइयों के त्योहार पर ज़रन क्यों हो रहा है। उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में एक और शर्मनाक घटना को अंजाम दिया गया। यहां हजरतगंज में चर्च के बाहर ही युवाओं की भीड़ ने इकत्त्र होकर हरे रामाए हरे कृष्णा जोर.जोर से गाया। इस घटना

जब नीतीश कुमार ने सीएम पद से इस्तीफा दियाए तो उन्होंने एक महादलित ;जीतन राम मांझीद्ध को मु यमंत्री बनाया। दिल्ली मेंए उन्होंने इस्तीफ़ देने के बाद या पंजाब में दलित मु यमंत्री क्यों नहीं बनायाध

एक्स सोशल मीडिया पोस्ट में झा ने लिखाए श्माननीय अरविंद केजरीवाल सरए मैंने बिहार के माननीय मु यमंत्री नीतीश कुमार को लिखा आपका पत्र पढ़ा। मैं आपकी असली पीड़ा समझ सकता हूं। आपकी पीड़ा यह है कि उस दिन सदन में माननीय गृह मंत्री अमित शाह आपके गठबंधन के नेताए उनकी पार्टी और उनके परिवार की पोल खोल रहे थेण्णकांग्रेस पार्टी और उसके नेताओं ने बाबा साहेब के साथ जो दुर्व्यवहार कियाए वह अक्ष य है... हमारे नेताए बिहार के माननीय मु यमंत्री नीतीश कुमार जी ने बाबा साहेब के पदचिन्हों पर चलते हुए बिहार में दलितों और पिछड़ों के लिए जो किया हैए आप और आपके गठबंधन के नेता उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप अपने पूर्वाग्रहों को त्यागें और देश की प्रगति के बारे में सकारात्मक सोचें।ए

इसी व्यंग्यात्मक पत्र ने नीतीश के करीबियों को सचेत कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि राजनीतिक गलियारों में तरह.तरह के झूठे प्रचार किये जा रहे हैंए जैसे कि उनकी तबीयत ठीक नहीं हैए उनका दिमाग ठीक से काम नहीं कर रहा है। झा दिवंगत भाजपा नेता और केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली के करीबी सहयोगी हुआ करते थे। 2012 में अमित शाह की पहल पर उन्हें जेडीयू में शामिल किया गया था। कहा जाता है कि अमित शाह के सुझाव पर ही उन्हें जेडीयू का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया था। नीतीश कुमार ने उन्हें 2019 में एमएलसी बनाया और बिहार कैबिनेट में शामिल किया।

के वीडियो में साफ देखा जा सकता है कि ईसाइयों की प्रार्थना में खलल पहुंचाकर ये युवा काफी प्रसन्नता महसूस कर रहे थे। क्रिसमस की खुशियां मनाते लोगों के लिए नफ़्त का इज़हार सोशल मीडिया पर भी देखा गया। महेन्द्र सिंह धोनी सांता के वेष में दिखे और उनके साथ उनका परिवार भी थाए तो लोगों ने इस पर तंज कसे। राज्यसभा सांसद सागरिका घोष ने क्रिसमस ट्री के पास खड़े होकर अपनी तस्वीर डाली और इस त्योहार की बधाई दीए तो उस पर सवाल उठाए जा रहे हैं कि जब मुसलमान और ईसाई हिंदू त्योहारों की बधाई नहीं देतेए तो इनके त्योहार पर बधाई क्यों दी जा रही है। भारतीय संस्कृति और स यता से पूरी तरह अनजान या बेहद मूर्ख किस्म के लोग ही इस तरह की बातें कर सकते हैं। दुख इस बात का है कि इस मूर्खता का अब जश्न मनाया जा रहा है।

परसाईजी ने कहा ही था कि अंधभक्त होने के लिए प्रचंड मूर्ख होना अनिवार्य शर्त है। श्री मोदी के बनाए न्यू इंडिया में यह शर्त पूरी होते नजर आ रही है। युवाओं को खास तौर पर इसी काम में लगा दिया गया है ताकि उन्हें न अपने रोजगार की चिंता रहेए न पेपर लीक या परीक्षा में धांधलियों की फ़िक् होए न उन्हें ये समझ आए कि उनके अभिभावक इस महंगाई में घर किस तरह चला रहे हैं।



विविध समाचार



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत बन रहा बड़ी आर्थिक शक्ति : मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी

चंडीगढ़ : हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि जिस गति से आज भारत प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है, उसके पीछे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का दूरदर्शी नेतृत्व और केंद्र सरकार की क्रांतिकारी आर्थिक नीतियाँ प्रमुख भूमिका निभा रही हैं। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश ने “एक राष्ट्र, एक टैक्स” की अवधारणा को साकार करते हुए जी.एस.टी. लागू किया, जिससे पूरा भारत एक एकीकृत बाजार में परिवर्तित हो गया है। जी.एस.टी. सुधारों से न केवल अर्थव्यवस्था को नई गति मिली है, बल्कि राज्यों के बीच व्यापार आसान हुआ है और व्यापारियों को अनावश्यक करों के जाल से मुक्ति मिली है। हाल ही में किए गए जी.एस.टी. सुधार इस बात का प्रमाण हैं कि प्रधानमंत्री मोदी की “गारंटी” सदैव पूरी होती है। ये सुधार आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में मील का पत्थर साबित होंगे। मुख्यमंत्री बुधवार को बिहार के पटना में बिहार चौम्वर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए “स्वदेशी” और “मेक इन इंडिया फॉर द वर्ल्ड” के आह्वान ने देश में विनिर्माण क्षेत्र को नई दिशा दी है। हाल ही में जापान यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्वारा प्रस्तुत यह विजन आत्मनिर्भर भारत की



परिकल्पना को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने कहा कि डिजिटल इंडिया अभियान के अंतर्गत यूपीआई से लेकर डीबीटी तक डिजिटल लेन-देन की क्रांति ने पारदर्शिता को बढ़ावा दिया है और भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाया है। आज भारत का डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर पूरी दुनिया के लिए एक उदाहरण बन चुका है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत ने विनिर्माण और उत्पादन पर बल देकर आयात पर निर्भरता घटाई है तथा वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला का एक मजबूत केंद्र बनकर उभरा है। केंद्र सरकार की दूरदर्शी नीतियों और सुधारों के परिणामस्वरूप आज भारत न केवल आत्मनिर्भरता की दिशा में अग्रसर है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में एक सशक्त साझेदार के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर चुका है। उन्होंने कहा कि

पिछले 11 वर्षों में, सड़क, रेल, हवाई अड्डों और बंदरगाहों के निर्माण में अभूतपूर्व निवेश हुआ है। ये सुविधाएं बेहतरीन कनेक्टिविटी, उद्योगपतियों के लिए व्यापार और लॉजिस्टिक्स की लागत को कम कर रही है। ईज ऑफ डूइंग बिजनेस के लिए अनावश्यक कानूनों को खत्म करना, प्रक्रियाओं को सरल बनाना, और लाइसेंस राज से मुक्ति दिलाने के लिए लगातार प्रयास किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री ने हमें विकसित भारत-2047 का लक्ष्य दिया है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, हमें अपने राज्यों को विकसित करना होगा। हरियाणा और बिहार को मिलकर देश की प्रगति की गति को तेज करना होगा। उन्होंने कहा कि आज यहां आकर उन्हें बिहार की मिट्टी की महक और हरियाणा की उद्यमशीलता की भावना का

एक अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। यह संगम, वास्तव में, हमारे देश की प्रगति और ‘विकसित भारत’ के संकल्प का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि बिहार और हरियाणा का रिश्ता केवल राज्यों की भौगोलिक सीमा तक सीमित नहीं है। यह रिश्ता प्रेम, श्रम और विश्वास का है। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि आज बिहार में डबल इंजन की सरकार के कारण यह पूरे देश में यह प्रदेश दूसरे सबसे तेजी से बढ़ने वाले राज्य के रूप में जाना जा रहा है। आज बिहार की जीडीपी वृद्धि दर 14 प्रतिशत से भी अधिक है। अब बिहार की जीडीपी में औद्योगिक क्षेत्र का हिस्सा 23 प्रतिशत है, जो कृषि के हिस्से से भी अधिक है। यह सिद्ध करता है कि बिहार में उद्योगों के लिए एक सुरक्षित और अनुकूल माहौल बना है। उन्होंने कहा कि राज्य में युवाओं को उद्योग की

जरूरतों संबंधी ट्रेनिंग के लिए भारत रत्न जननायक कर्पूरी ठाकुर स्किल यूनिवर्सिटी का उद्घाटन किया गया है। यह युवाओं को उद्योग-आधारित पाठ्यक्रम प्रदान कर रही है। सरकार की ‘एक जिला-एक उद्योग’ योजना ने इस दिशा में क्रांति ला दी है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण कटिहार का मखाना है, जो अब विश्व बाजार में अपनी चमक बिखेर रहा है। केंद्र सरकार ने इसे ‘सुपर फूड’ के रूप में स्थापित करने के लिए मखाना बोर्ड की घोषणा की है, जिससे किसानों और स्थानीय उद्योगों को नई शक्ति मिली है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उद्योगों द्वारा तैयार किए गए उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए बिहार में बुनियादी ढांचे को मजबूत किया है। राज्य में निवेशकों का विश्वास जीतने के लिए नीतिगत सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की गई है। सरकार ने निवेशकों को निरुश्लुक भूमि देने का निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बिहार में चमड़ा उद्योग, कपड़ा उद्योग सहित अन्य उद्योगों के प्रोत्साहन के लिए नई नीति बनाई गई है। आगामी समय में बिहार की अर्थव्यवस्था में न केवल गुणात्मक सुधार होगा बल्कि युवाओं को रोजगार के बेहतर अवसर भी उपलब्ध होंगे। इस मौके पर बिहार चौम्वर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी का गर्मजोशी से स्वागत किया गया।

हरियाणा नशे की राजधानी बन चुका है, सैनी सरकार पूरी तरह फेल : अनुराग ढांडा

चंडीगढ़ : आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनुराग ढांडा ने बुधवार को बयान जारी कर हरियाणा की भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री नायब सैनी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि “हरियाणा आज नशे की राजधानी बन चुका है, और मुख्यमंत्री नायब सैनी मौन साधकर कुर्सी बचाने में व्यस्त हैं। अनुराग ढांडा ने कहा कि सिरसा में पिछले कुछ दिनों में 4 लोगों की नशे से मौतों ने पूरे प्रदेश का दिल दहला दिया, लेकिन सरकार और पुलिस की संवेदनाएं मर चुकी हैं। प्रदेश में नशे का यह तांडव नया नहीं है। पिछले एक साल में नाममात्र की गिरफ्तारियां हुई हैं, जबकि तस्कर खुलेआम नशा बेच रहे हैं। सिरसा, हिसार, कैथल, फतेहाबाद, अंबाला, कुरुक्षेत्र जैसे जिले नशे के अड्डे बन चुके हैं। भाजपा सरकार सिर्फ ट्रान्सफर की राजनीति में लगी है। उन्होंने कहा, “बेटे खो चुकी मां रो-रोकर कह रही है कि उसने नशा बेचने वालों के नाम खुद पुलिस को बताए, मगर सिरसा पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की। मुख्यमंत्री नायब सैनी, जब एक मां को न्याय नहीं मिलता, तो आपका राज किस काम का है? सिरसा में चिट्ठे से लगातार मौतों के बाद भी से लेकर चेतक को बदला जा चुका है, पर हालात जस के तस हैं। “चेहरों की अदला-बदली हो रही है, सिस्टम वही सड़ा हुआ है। अनुराग ढांडा ने बताया कि सीएम नायब सिंह ने प्रदेश में नशे के खिलाफ कार्रवाई को दिखावे का खेल बना दिया है, और मौतें जारी हैं, और सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। पिछले एक साल में सिर्फ नाममात्र की गिरफ्तारियां हुई हैं, जबकि नशे का कारोबार दिन-दहाड़े फल-फूल

रहा है। नशा अब हर घर की दीवार तक पहुंच चुका है, और पुलिस प्रशासन भाजपा नेताओं के इशारे पर आंखें मूंदे बैठा है। “हरियाणा का नौजवान नशे में डूब रहा है, मांएं बेटों को खो रही हैं, और मुख्यमंत्री बयान दे रहे हैं कि हालात नियंत्रण में हैं कृ यह झूठ है, यह धोखा है! ढांडा ने कहा कि भाजपा की सरकार ने हरियाणा को “नशे का नक” बना दिया है। 16 जिले गंभीर रूप से प्रभावित हैं, जिनमें सिरसा सबसे आगे है, जहां सात हजार से अधिक केस दर्ज हो चुके हैं। उन्होंने कहा, “नशा अब लड्डू की तरह बिक रहा है कृ खुलेआम, पुलिस की नाक के नीचे, नेताओं की छत्रछाया में। ये नाकामी नहीं, मिलीभगत है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासन में पुलिस और तस्करों का गठजोड़ एक संगठित नेटवर्क में बदल चुका है। “मुख्यमंत्री नायब सिंह, आप हरियाणा के युवाओं को खो रहे हैं और फिर भी कुर्सी से चिपके हुए हैं। यह सरकार नहीं, अपराधियों की ढाल बन चुकी है, आम आदमी पार्टी ने मांग की है कि तत्काल राज्य में स्पेशल टास्क फोर्स गठित की जाए, पूरे प्रदेश में सख्त चेकिंग हो, और हर प्रभावित जिले में मुफ्त डी-एडिक्शन सेंटर खोले जाएं। साथ ही पुलिस भर्ती दोगुनी की जाए, और तस्करों के नाम सार्वजनिक कर षट् जांच कराई जाए। ढांडा ने कहा कि भाजपा और नायब सैनी का शासन हरियाणा के लिए अभिशाप बन चुका है। “हरियाणा के युवाओं की लाशें गवाही दे रही हैं कि यह सरकार नशे के कारोबार की साथी है। जनता अब चुप नहीं बैठेगी। अब आम आदमी पार्टी नशे के खिलाफ निर्णायक लड़ाई लड़ेगी और ‘ड्रग-फ्री हरियाणा’ बनाकर दिखाएगी।

जालंधर में नकाबपोश लुटेरे हथियार की नोक पर ज्वेलर्स की दुकान से लाखों की नकदी और सोने के गहने लूट कर फरार

जालंधर : भार्गव कैप इलाके में गुरुवार सुबह तीन नकाबपोश लुटेरे पिस्टल की नोक पर एक ज्वेलर की दुकान से लाखों की नकदी और सोने के गहने लेकर फरार हो गये। दुकान मालिक विजय के मुताबिक, उनके बेटे ने सुबह दुकान खोली थी। तभी तीन

लुटेरे अंदर घुसे और आते ही पिस्टल तानकर धमकाने लगे। एक लुटेरे ने तेजधार हथियार से काउंटर का शीशा तोड़ा, जबकि दूसरे दो लुटेरे गहने और नकदी समेटने लगे। लुटेरों ने बेटे को ँमकाकर तिजोरी से नगदी निकालने को कहा। उन्होंने करीब दो मिनट में दो लाख

रुपए की नकदी और गहनों से बैग भर लिया और मौके से फरार हो गये। इस दौरान लुटेरों ने दुकान मालिक के बेटे से हाथपाई भी की। घटना की सूचना मिलते ही भार्गव कैप थाना पुलिस मौके पर पहुंची और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की पहचान करने में जुटी है।

सोनीपत में 17 दुकानों पर चला बुलडोजर

सोनीपत:सुभाष चौक के पास कस्टोडियन की जमीन पर बनी 17 दुकानों को बुलडोजर चलाकर गिरा दिया गया। तहसीलदार ने इन दुकानों को गिराने के लिए बुधवार को नोटिस जारी किया था। प्रशासन की तोड़फोड़ की कार्रवाई की तैयारियों को देखते हुए दुकानदारों ने वीरवार सुबह दुकानों खाली करना शुरू कर दिया था। दोपहर के समय

जिला राजस्व अधिकारी सुशील शर्मा व तहसीलदार कीर्ति की देखरेख में दुकानों को ध्वस्त कर दिया गया। वर्ष 1977 में तत्कालीन नगरपालिका ने पार्किंग और ग्रीन बेल्ट के लिए आरक्षित स्थान पर दुकानों का निर्माण कर उन्हें किराये पर दिया था। जब इस गलती का संज्ञान लिया गया तो इसे हटाने के लिए उच्च न्यायालय में जनहित याचिका दायर की

थी। वर्ष 2009 में उच्च न्यायालय ने अवैध निर्माण हटाने का आदेश दिया, जिसके तहत 27 अक्तूबर 2009 को एक तरफ की 11 दुकानें तोड़ दी गई थी, लेकिन एटलस रोड की ओर बनी दुकानों के दुकानदारों ने हाई कोर्ट से स्टे ले लिया था। यह मामला कई साल तक लंबित रहा। 19 जुलाई 2023 को हाईकोर्ट के न्यायाधीश अनिल क्षेत्रपाल ने स्टे निरस्त

किया था। इसके बाद 16 अगस्त 2023 को प्रशासन ने 17 दुकानदारों को दुकानें खाली करने के लिए नोटिस जारी किया था।

22 अगस्त को दुकानदारों ने अपना सामान निकाल लिया और प्रशासन ने बिजली काटने के बाद कार्यवाही शुरू की, लेकिन दुकानदारों ने सुप्रीम कोर्ट से फिर से स्टे टस को (स्थास्थिति) ले लिया, जिससे कार्रवाई रुक गई थी। यह मामला सुप्रीम कोर्ट में चला, जहां नगर निगम ने अपने पक्ष में शपथ पत्र दायर कर स्पष्ट

किया कि 2009 से इन दुकानों से किराया लेना बंद कर दिया गया था और इनका निर्माण अवैध है। तथ्यों को जानने के बाद सुप्रीम कोर्ट ने 4 दिसंबर 2024 को स्टे निरस्त कर दिया और दुकानों को हटाने के आदेश दिए थे। सेक्टर-23 स्थित सामुदायिक केंद्र में 3 अक्तूबर नगर निगम की हाउस की बैठक में 225 से ज्यादा एजेंडों पर चर्चा हुई। इसमें सुभाष चौक पर कस्टोडियन की जमीन पर बनी 17 दुकानों के टूटने के बाद पुनर्वास करने का प्रस्ताव पारित किया गया था।

जालंधर के 800 परिवारों को उजड़ने नहीं देंगे, लोगों के संघर्ष में हर संभव मदद करेगी कांग्रेस : परगट सिंह

चंडीगढ़ : अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव और विधायक पदमश्री परगट सिंह ने साफ कर दिया है कि कांग्रेस पार्टी जालंधर के अंबेडकर नगर के 700-800 घरों को किसी भी कीमत पर उजड़ने नहीं देगी। इन सभी परिवारों को कांग्रेस की तरफ से कानूनी

सहायता सहित हर संभव मदद मुहैया करवाई जाएगी। उन्होंने मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान से अपील की है कि वह खुद निजी तौर पर हस्ताक्षेप करके इस मामले को हल करवाएं। ताकि लोगों को न्याय मिल सके। उन्हें मौका मिलता है तो वह खुद भी मुख्यमंत्री से भी मुलाकात करेंगे। परगट सिंह ने कहा कि निवर्तमान कांग्रेस सरकार ने पॉलिसी बनाई थी कि 12 साल से अधिक समय तक कोई व्यक्ति अगर किसी जमीन पर काबिज है तो उसे कुछ पैसे लेकर मालिकाना हक दिया जाना चाहिए। इस पॉलिसी को कांग्रेस सरकार ने लागू करने की तैयारी कर ली थी,

लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि इससे पहले पंजाब में कांग्रेस की सरकार बदल गई। मौजूदा सत्ताधारी आम आदमी

पार्टी की सरकार ने इस पॉलिसी को आगे नहीं बढ़ाया। जिसकी वजह से इस पॉलिसी का लोगों को लाभ नहीं मिल पाया। पूर्व शिक्षा मंत्री परगट सिंह ने कहा कि यह सिर्फ 700-800 घरों की बात नहीं बल्कि इतने परिवारों को उजाड़े जाने की बात है। ऐसा हरगीज नहीं होने दिया जाएगा। भले ही बिजली विभाग की इस जमीन पर लोगों ने कब्जा कर रखा हो, लेकिन वह करीब 70 साल से वहां बसे हुए हैं। कुछ ने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मकान बनवा लिए हैं, लेकिन अधिकतर मकानों में लोगों ने अपने खून पसीने की कमाई लगाई हुई है। उन्होंने कहा कि अब आप सरकार को चाहिए कि इन लोगों को उजाड़ने की बजाए उनसे कुछ पैसे लेकर मालिकाना हक दे।

पंजाब में आप नेता को सिर में मारी गोली, पूर्व डीएसपी ने साथियों के साथ मिलकर की फायरिंग

रोपड़ : पंजाब के रोपड़ जिले में उस समय सनसनी फैल गई जब चंडीगढ़ पुलिस के पूर्व कैच दिलशेर सिंह ने अपने साथियों के साथ मिलकर आप नेता नितिन नंदा पर फायरिंग कर दी। फायरिंग में नितिन नंदा गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें सिर के पीछे एक गोली लगी, जबकि दो गोलियां उनके शरीर को छूकर निकल गईं। यह घटना आनंदपुर साहिब के अगमपुर चौकदृजहाज रोड पर उस समय हुई जब नितिन नंदा एक विवाह समारोह में शामिल होने पहुंचे थे। अचानक हुई फायरिंग से मौके पर अफरा-तफरी मच गई और लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगे। घायल नितिन नंदा को तुरंत सिविल अस्पताल, आनंदपुर साहिब ले जाया गया। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें चंडीगढ़ रेफर कर दिया। सूत्रों के अनुसार उनकी हालत नाजुक बनी हुई है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि दोनों पक्षों के बीच प्रॉपर्टी को लेकर विवाद चल रहा था।

नबरंगपुर परमाणु प्लांट को लेकर ग्रामीणों ने खोला मोर्चा, किया उग्र प्रदर्शन

तेंटुलिखुंटी २२/१० (संवाददाता): नबरंगपुर जिले के तेंटुलिखुंटी ब्लॉक में स्थित हिरिमुंडा मैदान में गुरुवार को एक बड़ी जनसभा आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य प्रस्तावित परमाणु ऊर्जा संयंत्र का विरोध करना था। अनबाइका शक्ति प्रकल्प प्रतिरोध संग्राम समिति द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य जोर जल, जमीन, जंगल, आजीविका और पर्यावरण की रक्षा करने पर था। इस सभा में कांग्रेस और बीजू जनता दल (बीजद) के नेताओं, पूर्व विधायकों, महिला समूहों, किसान संगठनों, युवा समूहों और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। वक्ताओं ने आरोप लगाया

कि सरकारी कंपनी NTPC, तेंटुलिखुंटी ब्लॉक की पुजारिगुडा पंचायत के अंतर्गत आने वाले हिरिमुंडा में इस संयंत्र के लिए सर्वे कर रही है। उन्होंने कहा कि स्थानीय निवासियों को उचित जानकारी दिए बिना ही, विभिन्न एजेंसियों के जरिए जमीन, भूजल स्तर और भौगोलिक स्थितियों की जांच की जा रही है। उन्होंने इस बात पर भी आपत्ति जताई कि ग्राम सभाओं और पल्ली सभाओं में स्थानीय लोगों की राय लिए बिना ही इतनी बड़ी परियोजना की तैयारियां शुरू कर दी गई हैं। बीजद के आदिवासी सेल के राज्य कार्यकारी अध्यक्ष और पूर्व सांसद प्रदीप माझी ने कहा कि नबरंगपुर जिले में प्रस्तावित



संयंत्र के खिलाफ विरोध और तेज हो गया है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस परियोजना को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) का समर्थन प्राप्त है। उन्होंने प्रस्तावित परियोजना का विरोध करने के लिए कालाहांडी और नबरंगपुर जिलों के निवासियों

की एक समिति बनाने का आह्वान किया। माझी ने कहा कि इस समिति की जिम्मेदारी समझदार और जिम्मेदार लोगों को सौंपी जानी चाहिए। उन्होंने इस आंदोलन को व्यापक बनाने के लिए विजयी, नैतिक और जन समर्थन जुटाने की आवश्यकता

पर जोर दिया। विपक्षी नेताओं और स्थानीय निवासियों ने कहा कि वे किसी भी कीमत पर नबरंगपुर जिले में प्रस्तावित परमाणु ऊर्जा परियोजना को नहीं लगाने देंगे और इसके खिलाफ अपने आंदोलन को और तेज करने का संकल्प लिया। डबुगांव

के विधायक मनोहर रंधारी ने केंद्र और राज्य की भाजपा सरकारों की कड़ी आलोचना की। उन्होंने कहा कि इस मुद्दे को राज्य विधानसभा में उठाया जाएगा और राजनीतिक स्तर पर यह लड़ाई जारी रहेगी। रंधारी ने कहा कि यह संघर्ष केवल जिले या राज्य तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि नई दिल्ली में भी विरोध प्रदर्शन किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि इसके लिए विजयी सहायता, मजबूत संकल्प और जनता के समर्थन की आवश्यकता होगी। वक्ताओं ने लोगों से अपील की कि वे स्वतंत्रता आंदोलन की तरह एकजुट हों और इस परियोजना का विरोध करने का सामूहिक संकल्प लें। लांजीगढ़ के विधायक प्रदीप दिशारी ने कहा कि अब एक संयुक्त समिति

बनाना और भविष्य के विरोध-प्रदर्शनों के लिए रणनीति तैयार करना बहुत ज़रूरी हो गया है। अन्य वक्ताओं में BJD की जिला अध्यक्ष मंजुला माझी, कांग्रेस की जिला अध्यक्ष लिपिका माझी, पूर्व विधायक सदाशिव प्रधान और भुजबल माझी, तथा वरिष्ठ कांग्रेस नेता मुना त्रिपाठी शामिल थे। उन्होंने कहा कि नबरंगपुर जैसे पिछड़े ज़िले में, जहाँ लोग अपनी पुश्तैनी ज़मीन पर शांति से रहते हैं, परमाणु ऊर्जा परियोजना को आसानी से स्वीकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के कारण ज़मीन का अधिग्रहण होगा, लोगों को विस्थापित होना पड़ेगा, पर्यावरण प्रदूषित होगा और खेती को नुकसान पहुँचेगा, जो यहाँ के

लोगों की आजीविका का मुख्य साधन है। उन्होंने यह भी कहा कि इसका असर पड़ोसी जिलों – कालाहांडी, रायगड़ा और कोरापुट – तक भी पड़ेगा। राजेश जानी ने आरोप लगाया कि इससे 35 गाँव प्रभावित हो सकते हैं। उन्होंने बताया कि 100 से ज्यादा परिवारों के घर, खेत और पारंपरिक आजीविका छिन सकती है। विरोध-प्रदर्शन का नेतृत्व कर रही संग्राम समिति ने चेतावनी दी है कि अगर इस प्रस्ताव को वापस नहीं लिया गया, तो वे पूरे जिले में जन-आंदोलन को और तेज कर देंगे। इस सभा में प्रह्लाद हियाल, कांग्रेस नेता अखिल भतरा, पी. नागराबम और कई अन्य नेता, कार्यकर्ता तथा स्थानीय निवासी शामिल हुए।

ओडिशा में मनी लॉन्ड्रिंग केस में ईडी की बड़ी कार्रवाई आरएसपी द्वारा नुआगाँव ब्लॉक में ‘सिनर्जी लोक सांस्कृतिक महोत्सव’ का आयोजन

भुवनेश्वर= प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), भुवनेश्वर जोनल कार्यालय ने अवैध खनन, चोरी, डकैती और विस्फोटक आपूर्ति मामले में भुवनेश्वर स्थित एक खनिक के खिलाफ अभियोजन शिकायत दर्ज की है, केंद्रीय एजेंसी ने सोमवार को कहा। ईडी के आधिकारिक बयान के अनुसार, अभियोजन शिकायत 16 अक्टूबर, 2026 को रतिकान्ता राउत के खिलाफ भुवनेश्वर में विशेष अदालत (पीएमएलए) के समक्ष दायर की गई थी। यह मामले में पहली पूरक अभियोजन शिकायत है, जबकि मुख्य शिकायत पहले इस साल 7 जुलाई को उनकी पत्नी, लक्ष्मीप्रिया फ़स्टी और उनके अन्य सहयोगियों के खिलाफ दायर की गई थी। ईडी ने राउत के खिलाफ भारतीय दंड संहिता, 1860, शस्त्र अधिनियम, 1959 और विस्फोटक पदार्थ अधिनियम, 1908 के तहत उनके खिलाफ ओडिशा पुलिस द्वारा दर्ज की गई कई एफआईआर के आधार पर मनी लॉन्ड्रिंग की जांच शुरू की, जिसमें उनके अपने नाम पर, उनके परिवार के सदस्यों के



नाम पर और उनकी संबद्ध संस्थाओं के माध्यम से चल और अचल संपत्तियों के रूप में अपराध की आय के अधिग्रहण, कच्चे और छुपाने सहित मनी लॉन्ड्रिंग के अपराध में शामिल होने के लिए शामिल है। ईडी ने कहा, रतिकान्ता राउत एक हिस्ट्रीशीटर है, जिसके खिलाफ पूरे ओडिशा के विभिन्न पुलिस स्टेशनों में अवैध उत्खनन, चोरी, डकैती और विस्फोटकों की आपूर्ति से संबंधित 27 एफआईआर दर्ज की गई हैं। एजेंसी के अनुसार, राउत और उससे जुड़ी संस्थाओं ने अपराध से 341 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई की। जबकि उनके पास बैंकनाल में लघु खनिज खदान पट्टे थे, वह कथित तौर पर अनुमेय सीमा से परे बड़े पैमाने पर उत्खनन

में लगे हुए थे, अनधिकृत क्षेत्रों से खनिजों को निकाला, अवैध रूप से विस्फोटकों की खरीद और उपयोग किया, और खनिजों की चोरी और मिलावट में शामिल थे। ओडिशा अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र (ओआरएस एसी) द्वारा किए गए ड्रोन और उपग्रह सर्वेक्षणों ने पट्टा क्षेत्रों के भीतर अतिरिक्त खनन की पुष्टि की, साथ ही पट्टा सीमाओं के बाहर सात पैच में अनधिकृत उत्खनन की पुष्टि की, जिसमें उनकी कंपनी, मेसर्स एश्योरेंस कॉनडेव प्राइवेट लिमिटेड के स्वामित्व वाली सरकारी भूमि और संपत्ति शामिल थी। ईडी ने कहा कि राउत ने मां तारिणी स्टोन क्रशर, आरएलआर मर्केटाइल, साई संभु इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड सहित परस्पर जुड़े खातों और व्यावसायिक संस्थाओं के माध्यम से धन की

हेराफेरी की और धन का स्थानांतरण किया। लिमिटेड (एसएसआईपीएल), एश्योरेंस मेटलॉयड एंजिजम प्रा. लिमिटेड, और लक्ष्मीप्रिया फ़स्टी जैसे व्यक्तियों के माध्यम से। अपराध की आय को कथित तौर पर उनके नाम पर पंजीकृत चल और अचल संपत्तियों, परिवार के सदस्यों के नाम और संबंधित व्यवसायों के तहत छुपाया गया था। एजेंसी ने पहले 8 जनवरी, 2025 को कई जुड़े परिसरों की तलाशी ली थी। राउत को औपचारिक रूप से 20 अगस्त, 2026 को गिरफ्तार किया गया था और विशेष अदालत ने पांच दिनों के लिए ईडी की हिरासत में भेज दिया था। बाद में उनकी जमानत याचिका 26 अगस्त, 2026 को खारिज कर दी गई, जिससे उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। बाद में, एजेंसी द्वारा नए आपत्तिजनक सबूत पेश किए जाने के बाद, 7 सितंबर, 2026 को चार दिनों के अतिरिक्त ईडी हिरासत दी गई। एजेंसी ने कहा कि अदालत ने प्रथम दृष्टया मनी लॉन्ड्रिंग गतिविधियों में उनकी संलिप्तता पाए जाने के बाद राउत की जमानत याचिका खारिज कर दी थी।

राउरकेला इस्पात संयंत्र (आर.एस.पी.) के सी.एस.आर. विभाग द्वारा तेरकेला के जाज़्बेरना गाँव में ‘सिनर्जी लोक सांस्कृतिक महोत्सव’ के अंतर्गत नुआगाँव ब्लॉक स्तरीय नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में नुआगाँव ब्लॉक के विभिन्न गाँवों के 30 नृत्य दलों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। समापन समारोह में आर.एस.पी. के कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्री अनिल कुमार मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे, जबकि उपाध्यक्ष (डीएमएस), श्रीमती बंदना सिंह सज्जानित अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। इस अवसर पर महा प्रबंधक (सी.एस.आर.), श्री बिभाबसु मलिक, उप महा प्रबंधक (सी.एस.आर.), श्री आर.एस.बारा, उप महा प्रबंधक (सी.एस.आर.), श्री पी.साहू, तेरकेला की सरपंच सुश्री सुखमणि ओराम, सी.एस.आर. विभाग के अन्य अधिकारी, स्वयं सहायता समूहों के सदस्य तथा गाँव के गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। इस अवसर पर



श्री कुमार ने प्रतियोगिता के विजेताओं एवं प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने के लिए आर.एस.पी. के सी.एस.आर. विभाग द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। श्री कुमार ने विजेता दलों को पुरस्कार प्रदान किए, जबकि अन्य गणमान्य अतिथियों ने प्रतिभागी दलों को सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए। तेरकेला के रेखा डांस ग्रुप ने नुआगाँव ब्लॉक नृत्य महोत्सव में चैंपियन का खिताब हासिल किया। दल

को 10,000/- रुपये की नकद राशि और चैंपियन ट्रॉफी प्रदान की गई। बांद्रई गाँव के मिलन ग्रुप ने 8,000/- रुपये की नकद राशि और ट्रॉफी के साथ द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। वहीं, खरुआटोली गाँव के मोनिका डांस ग्रुप ने 6,000/- रुपये की नकद राशि और ट्रॉफी के साथ तृतीय पुरस्कार जीता। इस अवसर पर निर्णायकों को भी सज्जानित किया गया। शेष सभी प्रतिभागी नृत्य दलों को 2,500/- रुपये की राशि के सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम का

आयोजन आर.एस.पी. के सी.एस.आर. विभाग द्वारा जय सरना स्वयं सहायता समूह के सहयोग से किया गया। श्री बी.मलिक ने अतिथियों एवं उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया, जबकि श्री आर.एस.बारा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आर.एस.पी. की सी.एस.आर. टीम ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस नृत्य महोत्सव का आनंद लेने के लिए आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में ग्रामीण उपस्थित हुए।

शराब के नशे में मां-बाप ने 6 महीने के बच्चे की ले ली जान

कटक २२/१० (संवाददाता): ओडिशा के कटक में चौद्वार थाना व्याघ्रवाहिनी मैदान के पास मौजूद आदिवासी बस्ती में एक दुखद घटना घटी है। शराब के नशे में धुत होकर मां-बाप ने अपने 6 महीने के बेटे को मार डाला। इसके बादए उसे सुनसान जगह पर दफना दिया। थाने में मिली शिकायत के बाद चौद्वार थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। उन्होंने लाश को बरामद किया। अब पुलिस ने घटना की छानबीन में शुरू कर दी है। मिली जानकारी के अनुसारए सोमवार को आदिवासी बस्ती के राजू हेंब्रम और संभारी हेंब्रम अपने तीन दोस्तों के साथ घर के अंदर बैठकर देर रात तक शराब पी रहे थे। अधिक नशा होने के बाद दोनों वहां सोये हुए 6 महीने के बच्चे के ऊपर चढ़ गए।इसके बारे में दोनों को उस वक्त पता नहीं चलाए लेकिन मंगलवार की सुबह जब नशा उतरा तो दोनों ने अपने बेटे को मृत पाया। ऐसे में पति.पत्नी ने

हडबड़ी में आकर बच्चे की लाश को एक सुनसान जगह पर ले जाकर मिट्टी खोदकर उसे दफन कर दिया। इस संबंध में पड़ोस के लोग और कुछ युवाओं को जानकारी मिली। उन्होंने तुरंत चौद्वार थाना को इस बारे में खबर दी। थाना अधिकारी विश्व रंजन साहू ने मौके पर पहुंचने के बाद साईंटिफिक टीम को बुलाया। साईंटिफिक टीम भी मौके पर पहुंच कर घटना की अधिक छानबीन में जुट गई है। बाद में मजिस्ट्रेट पहुंचने के बाद मिट्टी के नीचे से दफनाए गए 6 महीने के बच्चे के लाश को निकाला गया और उसे पंचनामा करने के लिए कटक बड़ा मेडिकल को भेजा गया। पुलिस बच्चे की मां.बाप से अधिक पूछताछ में जुटी है। इसको लेकर एक मामला भी दर्ज की गई है। उधर जगतसिंहपुर जिले के तितौल थाना क्षेत्र के शिरस्ता गांव में दो लोगों की रहस्यमयी परिस्थितियों में मृत्यु हो गई। आशंका जताई जा रही है कि दोनों की मौत पूड प्वाइजनिंग या ड्रिंक की वजह से हुई है।

भुवनेश्वर/रायगडा २२/१० (संवाददाता): ओडिशा के रायगडा जिले में छह महीने पहले खनन-विरोधी प्रदर्शन के दौरान हुई झड़प के सिलसिले में दो आदिवासी अधिकार कार्यकर्ताओं, रैंडल सिकेरा और लक्ष्मण नाइक को गिरफ्तार किया गया है। एक नागरिक समाज संगठन ने पुलिस की साईंकारवाई की निंदा करते हुए आरोप लगाया है कि इसका मकसद अन्याय के खिलाफ हो रहे विरोध प्रदर्शनों को विफल करना था। पुलिस ने मंगलवार को इन आरोपों को खारिज करते हुए दावा किया कि अप्रैल में इलाके में खनन गतिविधियों के खिलाफ हुए एक विरोध प्रदर्शन के दौरान, इन दोनों ने आदिवासियों को सुरक्षाकर्मियों पर हमला करने के लिए उकसाया था। एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि 16 अक्टूबर की रात को पुलिस ने कालाहांडी जिले में उनके घरों से सिकेरा और नाइक को गिरफ्तार किया। उन्होंने बताया कि दोनों पर हत्या के प्रयास



और दंगा करने जैसे गंभीर आपराधिक आरोप लगाए गए हैं, साथ ही उन पर %आर्मस् एक्ट (हथियार कानून) के तहत भी मामला दर्ज किया गया है। नागरिक समाज समूह – कंसर्नड सिटीजन्स कमिटी, ओडिशा-ने इन गिरफ्तारियों की निंदा की है। समूह का आरोप है कि उन्हें केवल इसलिए हिरासत में लिया गया ताकि आदिवासियों की अन्याय के खिलाफ लड़ाई और जल, जंगल व जमीन जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर उनके अधिकारों

के लिए चल रहे संघर्ष को कमजोर किया जा सके। साउथ वेस्टर्न रेंज के डीआईजी अखिलेशवर सिंह ने फोन पर पीटीआई को बताया, गिरफ्तार किए गए लोग निर्दोष नहीं हैं। डॉ. रैंडल सिकेरा लोगों को चिकित्सा सेवाएं नहीं दे रहे थे, बल्कि आदिवासियों को राज्य सरकार के खिलाफ भड़का रहे थे। नाइक भी लोगों को गुमराह कर रहे थे। पुलिस किसी निर्दोष व्यक्ति को, खासकर एक डॉक्टर को, उ्यों गिरफ्तार करेगी? अधिकारी ने बताया

कि कालाहांडी और रायगडा जिलों में कई डॉक्टर काम कर रहे हैं, लेकिन डॉ. सिकेरा के अलावा किसी और को गिरफ्तार नहीं किया गया है। गिरफ्तारी को सही ठहराते हुए सिंह ने कहा, जो लोग उनके निर्दोष होने का दावा कर रहे हैं, उन्हें यह देखना चाहिए कि ज़्या डॉक्टर वास्तव में लोगों को चिकित्सा सेवाएं दे रहे थे या उन्हें भड़का रहे थे। पुलिस द्वारा कथित तौर पर प्रताड़ित किए जाने के सवाल पर डीआईजी ने कहा, उन्होंने

अदालत में मजिस्ट्रेट के सामने ऐसा कोई आरोप नहीं लगाया है। पुलिस ने बताया कि रायगडा के कांतामल गांव में अप्रैल महीने में स्थानीय लोगों और पुलिसकर्मियों के बीच हुई झड़प के मामले में सिकेरा और नाइक को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने भीड़ को तितर-बितर करने के लिए लाठीचार्ज किया और आसू गैस के गोले छोड़े। इस घटना में कई लोग और पुलिसकर्मी घायल हो गए थे।

एक अन्य अधिकारी ने बताया, रैंडल और नाइक का नाम FIR में नहीं था, लेकिन बाद की जांच में उनकी संलिप्तता सामने आई। उन्होंने कांतामल के आदिवासी निवासियों को पुलिस बल पर हमला करने के लिए उकसाया था। नागरिक समाज समूह (सिविल सोसाइटी ऑफ़ रूफ) ने सभी लोकतांत्रिक और प्रगतिशील संगठनों से एकजुटता दिखाने और ओडिशा के लोगों के लिए जल, जंगल और जमीन की लड़ाई लड़ रहे लोगों के

खिलाफ दर्ज सभी आपराधिक मामलों को वापस लेने की मांग करने का आग्रह किया है। समूह ने आरोप लगाया कि अपनी जमीन, जंगल और जल संसाधनों की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे आदिवासी और दलित समुदायों के खिलाफ राज्य द्वारा दमन की कार्रवाई की जा रही है। नागरिक समाज संगठन का दावा है कि जन आंदोलनों का समर्थन करने वाले खनन-विरोधी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया जा रहा है। संगठन ने बताया कि नाइक मा माटी माली सुरक्षा मंच और समाजवादी जन परिषद के एक प्रमुख दलित कार्यकर्ता हैं, जबकि डॉ. सिकेरा कालाहांडी और रायगडा जिलों में आदिवासी समुदायों के साथ काम कर रहे हैं। संगठन का दावा है कि ये दोनों खनन गतिविधियों और औद्योगीकरण से पैदा हुई समस्याओं के खिलाफ जन आंदोलनों का समर्थन करने और लोगों के आवासों की रक्षा करने के लिए समर्पित हैं।